अजायब बानी

मासिक पत्रिका

मार्च–2021

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–अठारहवां अंक–ग्यारहवां मार्च–2021

कर्मों का फल 3

कुछ न बनें 13

मालिक की मौज 19

भजनों को अपनी प्रार्थना बनाएं 31

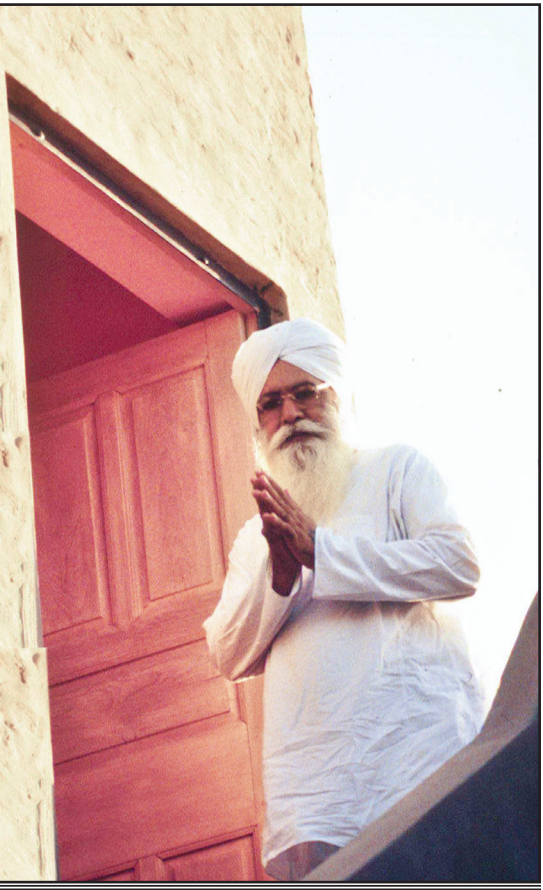

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह व राजेश कुक्कड़**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 228 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

नाम जप बंदेया

नाम जप बंदेया, लाहा खट बंदेया,
बंदगी बिना होर सहारा ना, बिना बंदगी कोई चारा ना, X 2

1. *रंग ते तमाशे, कुछ दिना लई रैहणगे,*
कीते होए कर्मां दे, दु:ख सहणें पैणगे, X 2
अड़ी छड अड़या, रस्ते लग्ग अड़या, कित्ते मिल जाए दण्ड करारा ना,
बिना बंदगी कोई.....

2. *सच्चा गुरु लब्भ, जिंद यमां तो छडौणी जे,*
सदा नाम जप, जिंद रब लेखे लौंणी जे, X 2
हुण मौका ऐ, कम सौखा ऐ, होर पाऐ जे काल पवाड़ा ना,
बिना बंदगी कोई.....

3. *घट-घट विच बैह के, कर दा संभाल ओह,*
रीझदा ना कदे गल्लां, बहुतियां नाल ओह, X 2
होमैं कढ़नी पवे, दुनिया छडणी पवे, झूठ लालच रहे विचारा ना,
बिना बंदगी कोई.....

4. *सच्ची जे तड़फ, सच्चा मुर्शिद आवे,*
काल पावर दी, कोई पेश ना जावे, X 2
'अजायब' दु:ख सैहंदा, किवें सुख लैंदा, जे कर मिलदा कृपाल प्यारा ना,
बिना बंदगी कोई.....

गुरु अर्जुन देव जी
की बानी

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कर्मों का फल

26 मार्च 1988 16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

सभी सन्त यही होका देते गए हैं कि जब हम गलतियाँ करते हैं तो हमें निचली योनियों में जाना पड़ता है, जब कोई अच्छा कर्म हो जाता है तो हमें थोड़ा बहुत सुख मिल जाता है। सभी सन्तों ने अपने तजुर्बे बताए हैं। मौलाना रूम कहते हैं, ''मैं बार–बार घास की तरह उगा, मैंने अनेकों बार माता–पिता देखे।'' गुरु अर्जुनदेव जी भी यही कहते हैं, ''हमनें कीड़ो–पतंगों, हाथी–घोड़ों के अनेकों जन्म पाए और अनेकों बार हम पहाड़ और वृक्ष बने।'' जिन महात्माओं की आँखे खुली थी उन्होंने हमारे ऊपर तरस खाकर ये लेखनियाँ लिखी और हमें जानकारी दी।

आप पेड़ की योनि को ही ले लें उसे कितना कष्ट है। पेड़ ऊँची जगह पैदा हो जाता है तो उसे गर्मी सहनी पड़ती है और वह जरुरत के मुताबिक अपनी खुराक खुद नहीं ले सकता। सर्दी का मौसम है पानी की जरूरत नहीं अगर पेड़ किसी झील या दरिया के किनारे उग जाता है वहाँ उसे सर्दी का दु:ख झेलना पड़ता है।

आप बैल की तरफ देखें कि उसे कितनी तकलीफें उठानी पड़ती है। बैल को अच्छी खुराक नहीं देते। इंसान अनाज खा जाता है, बैल के लिए भूसा–तूड़ी ही रह जाती है। बैल का कंधा टूट जाता है फिर भी उसे गाड़ी को खींचना पड़ता है लेकिन वह किसी से कह नहीं सकता कि वह इतना बोझ नहीं खींच सकता। उसे बार–बार चाबुक पड़ते हैं अगर वह सड़क पर गिर जाता है तो वह किस माता के पास जाकर अपनी फरियाद करे?

महाराज सावन सिंह जी अपनी आँखों देखी एक घोड़े की हालत बताया करते थे। आप रावल पिंडी में अपने मकान से बाहर निकले तो

ताँगे वाले ने ताँगे में ज्यादा सवारियां बिठा रखी थी। कानून के मुताबिक चार सवारियाँ ही बिठा सकते हैं। अंग्रेज अफसर ने ताँगे वाले से पूछा कि तूने ज्यादा सवारियां क्यों बिठाई हुई है? महाराज सावन सिंह जी ने उस अग्रेंज अफसर से पूछा, ''साहब! आपने कभी यह भी सोचा कि इसने क्या कर्म किए थे जिस कारण यह घोड़ा बना?'' उस अंग्रेज अफसर ने कहा, ''यह तो नया ही सवाल है हम इस मसले को हल नहीं कर सकते।''

महाराज सावन सिंह जी ने ठंडा होका लेकर कहा, ''हो सकता है कभी यह धनी आदमी या सेठ–साहूकार हो लेकिन इसने 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं की और यह अपने बुरे **कर्मों का फल** इस घोड़े के जामें में भोग रहा है।'' गुरु नानकदेव जी ने तो यहाँ तक कहा है:

बिन नामे सब नीच जात है बिष्टा के कीड़े होय।

प्यारेयो, परमात्मा हमारे बुरे कर्मों का दंड देने के लिए हमें बिष्टा के कीड़े तक बना देता है। वहाँ हमारा मुँह, नाक सारा दिन गंदगी में ही रहता है, ये तो पशु–पक्षियों, कीड़े–पतंगों की बात है। हम जिस इंसानी जामें में बैठे हैं इसे सब योनियों का सरदार कहकर बयान किया गया है। आप इसकी हालत की तरफ देखें। कबीर साहब कहते हैं, ''मैं जिन लोगों से मिला वे सारे लोग अपने दु:खों से भरे हुए ही मिले।'' गुरु नानकदेव जी ने एक लफ्ज में ही सारी बात समझा दी:

नानक दुखिया सब संसार, सो सुखिया जिस नाम उद्धार।

हमारे अंदर हमारा जानी दुश्मन मन बैठा है, यह हमें एहसास ही नहीं होने देता कि हम दु:खी भी हैं, हम दु:ख भोग रहे हैं लेकिन हम कहते हैं कि हम बहुत सुखी हैं। हमें जो थोड़े बहुत सुख के साँस नजर आते हैं हमें यह ज्ञान नहीं कि ये कब दु:खों में तबदील हो जाएंगे। हम घर से राजी–खुशी चलते हैं कोई ऐसा ख्याल नहीं होता कि हमारे ऊपर कोई बुरा वक्त आने वाला होता है। थोड़ी दूर जाने पर एक्सीडेंट हो जाता है हाथ–पैर

टूट जाते हैं, शक्ल से बदशक्ल हो जाते हैं और भी ऐसी कई घटनाएं हैं जो अचानक घट जाती हैं जो हमें बेबस होकर भोगनी पड़ती हैं। जिसके अंदर मन है उसे कभी शान्ति नहीं। आप इसे दुनिया की सारी लज्जतें, धन–दौलत, मान–बड़ाई कुछ भी दे दें लेकिन जिसके अंदर इन्द्रियों के विषय–विकारों के झौंके उठ रहे हैं क्या वह सुखी है?

जब हमारा साथी संसार से चला जाता है। बच्चा चला जाए बाप बैठा है, बाप चला जाए बच्चे बैठे हैं। उस समय दिल पर कितनी चोट लगती है कितनी परेशानी पैदा होती है हम कितना दु:ख महसूस करते हैं। मियाँ–बीवी का रिश्ता प्यार भरा होता है, प्यार के बंधन में हमने कसमें उठाई होती हैं कि हम एक–दूसरे का साथ देंगे लेकिन हमें इतना भी पता नहीं होता कि इस पापी मन ने हमारे अंदर कब बेइत्तफाकी पैदा कर देनी है, कब परेशानी भरी जिंदगी शुरू हो जाएगी।

महात्माओं ने जितनी भी कहानियाँ ब्यान की हैं वे उनके जीवन की घटनाएं होती हैं। उन्होंने ये कहानियाँ इसलिए दर्ज की होती हैं कि प्रेमी लोग इनसे फायदा उठा सकें। गुरु अर्जुनदेव जी बहुत तजुर्बेकार थे, आपने बहुत सारी बानी लिखी है, आप अपने गुरुदेव के बहुत श्रद्धालु थे। आप कहते हैं कि हम जब से परमात्मा से बिछुड़े हैं हर जामें में खज़ल–ख्वार होते आए हैं:

हरि बिसरत सदा खुवारी। हरि बिसरत सदा खुवारी।।
कर्म धर्म कर मुक्त मंगाही, मुक्त पदार्थ नाम ध्याई।।

आज से चालीस–पैंतालिस साल पहले हिन्दुस्तान में बहुत सी रियासतें थी, उनके छोटे–छोटे रजवाड़े थे। वे लोग खुद मुखतियार और ऐश–परस्त होते थे, उन्हें कोई रोकने वाला नहीं था। वे जब किसी की अच्छी औरत या बहन–बेटी को देखते तो उसे जबरदस्ती महल में ले आते थे। उस समय आज की तरह लोकतंत्र नहीं था कि पब्लिक अपना दु:ख सरकार को सुना सके।

गुर्जर जाति का एक बहुत बड़ा व्यापारी था, वह व्यापार करने चला गया। उसका घर राजा के महल के नजदीक था। उसकी पत्नी नहाकर बाहर अपने बाल सुखा रही थी। महल के ऊपर से राजा ने उस औरत को देखा और कहा कि यह बहुत अच्छी औरत है। उसने अपने अहलकार को भेजकर उस औरत को बुलवाया, उस वक्त के राजाओं को कोई मना नहीं कर सकता था। उस राजा ने अपने महल में उस औरत को रखा कुछ समय के बाद उसका पति व्यापार करके वापिस आया। जब उसे पता लगा कि उसकी पत्नी को राजा ले गया है तो उसने अपनी पत्नी को प्यार से पत्र लिखा और उसे वह वक्त याद दिलवाया जो उन्होंने शादी के वक्त आपस में प्रण किया था। उसकी पत्नी ने पत्र पढ़कर कहा कि मेरा दिल तेरे साथ ही है। इसने मुझे जबरदस्ती अपने महल में रखा हुआ है। मुझे जैसे ही मौका मिलेगा मैं तेरे पास जरूर पहुँच जाऊंगी।

आखिर एक दिन राजा शराब पीकर बाहर गया वह औरत भी उसके साथ ही थी। औरत ने मौका देखकर राजा का कत्ल कर दिया। वह सामान लेकर अपने प्यारे पति के पास पहुँच गई। ख्याल आया कि अगर हम यहाँ रहेंगे तो ये लोग हमें खत्म कर देंगे। हम इस राज्य को छोड़कर चले जाएं, जब वे जाने लगे तो रास्ते में रात हो गई। वे सोए हुए थे उसके पति को सर्प ने डस लिया। इतने में वहाँ चोर आ गए वे उस औरत को अपने साथ ले गए, चोरों ने उस औरत को एक वेश्या के पास बेच दिया। उस औरत की शादी से एक बच्चा पैदा हुआ था जो बाद में जवान हुआ। वह व्यापार करता हुआ उसी शहर में आ गया।

आपको पता ही है कि मन इन्द्रियाँ इंसान को कितना जलील करती हैं। जब विषय की आग अंदर भड़कती है तो इंसान सारी हदें पार कर जाता है। उस समय कामी को अपना ही ख्याल होता है। कबीर साहब कहते हैं, ''यह न माता देखता है न बहन देखता है और न ही मजहब देखता है।''

वह लड़का उस औरत के पास चला गया जब उसके साथ दुनियादारी की। उस औरत को पता लगा हो सकता है कि यह मेरा ही लड़का हो। उस औरत ने पूछा तू किसका लड़का है किस शहर से आया है? उस लड़के ने सारा पता बताया। उस औरत को बहुत दु:ख हुआ कि इससे ज्यादा और अपराध क्या हो सकता है मैं तो पहले ही बहुत दु:खी थी।

आखिर उस औरत ने किसी ज्योतिषी से पूछा जो औरत अपने लड़के के साथ ही भोग वासना कर बैठे उसे प्रायश्चित करने के लिए क्या करना चाहिए, उसके पाप की निवृति कैसे हो सकती है? ज्योतिषी ने अपने तजुर्बे से हिन्दुओं के शास्त्रों के मुताबिक बताया कि दरिया का किनारा हो पीपल की लकड़ियाँ हों वह औरत अपनी मर्जी से उसमें आग लगाकर जल जाए और उसकी राख दरिया में पड़े तो उसका प्रायश्चित हो सकता है।

औरत ने उसी तरह किया जब वह आग लगाने लगी तो तेज आँधी आई। आपको पता ही है कि आँधी बड़े–बड़े पेड़ तोड़ देती है तो चिता क्या चीज थी। आँधी उसे उड़ाकर ले गई। वह दरिया में बह रही थी और बचाने के लिए आवाज लगा रही थी कि कोई मुझ पर रहम करके मुझे बचा ले। एक गुर्जर ने उसे दरिया से निकाल लिया, वह गुर्जर रोज उसे शहर में दूध बेचने के लिए भेजा करता था।

एक दिन बादशाह की सवारी आ रही थी, पुलिसवालों ने कहलवा दिया कि कोई आदमी गली, बाजार, सड़क पर न निकले। गुर्जरियाँ दूध लेकर आती थी उन्होंने सोचा कि हम जल्दी–जल्दी दूध डाल दें आज की तरह साधन नहीं थे गर्मी में दूध जल्दी फट जाता है। जब बादशाह की सवारी आगे बढ़ी तो पुलिस वालों ने उन गुर्जरियों के दूध के बर्तन तोड़ दिए। सब गुर्जरियाँ रो रही थी कि हमारे बर्तन तोड़ दिए हैं, हमारा दूध सड़क पर बिखर गया है लेकिन वह गुर्जरी रोई नहीं बल्कि हँस रही थी।

राजा ने देखा कि सारी गुर्जरियाँ रो रही हैं लेकिन यह हँस रही है तो राजा ने उससे हँसने का कारण पूछा?

उस गुर्जरी ने बताया कि मैं आपको क्या बताऊँ मेरी शादी एक अच्छे व्यापारी के साथ हुई थी। उस नगरी का राजा मेरे रूप पर बेईमान हो गया वह जबरदस्ती मुझे अपने महल में ले गया। बड़ी मुश्किल से मैं उस राजा से अपनी जान छुड़वाकर अपने पति के पास पहुँची। रात को हम सोए हुए थे मेरे पति को सर्प ने डस लिया। उस समय चोरों ने मुझे पकड़कर वेश्या के पास बेच दिया, वहाँ ऐसा कर्म हुआ कि मेरे बेटे ने ही मेरे साथ भोग-वासना की। मैं उस पाप की निवृति के लिए चिता में सड़ रही थी लेकिन परमात्मा का हुक्म नहीं था, मैं अपने जोर से मर भी नहीं सकी फिर मुझे इन दूधवालों ने पकड़ लिया।

राजा! अब आप ही मुझे बताएं कि मैं इस छोटे से बर्तन के लिए क्यों रोऊँ? मुझे पता नहीं कि मैंने ऐसे क्या कर्म किए थे, मैं जिन **कर्मों का फल** भोग रही हूँ। 'शब्द-नाम' की भक्ति न करने के कारण ही हम ऐसे कर्म करते हैं जिनका अफजाना भुगतने के लिए हमें फिर इस संसार में आना पड़ता है। क्या यह कोई कम खुआरी है?

हरि बिसरत सदा खुआरी।। हरि बिसरत सदा खुआरी।।
ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट तुहारी।।

हमारे अंदर बैठा मन सदा ही हमें फँसाने की कोशिश करता रहता है, वकील की तरह समझाता रहता है अगर इंसान पाप से हटता है तो मन इसे पुण्य की तरफ ले जाता है। किसी की मदद कर देना बुरी बात नहीं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब हम किसी की थोड़ी-बहुत मदद करते हैं या थोड़ा बहुत दान करते हैं तो मन कोई न कोई ख्वाहिश पैदा कर देता है कि हमें इसका यह अफजाना मिले लेकिन उसे भोगने

के लिए आपको फिर संसार में आना पड़ेगा फिर जहाँ जन्म लेंगे वहाँ खज्जल–खुआरी खड़ी है।''

अगर परमात्मा आपके ऊपर दया–मेहर करके आपको पैसे देता है और आपके दिल में ख्याल आता है कि हम किसी गरीब की मदद करें तो आप उस मदद को उसी समय भूल जाएं। अगर आप दाँए हाथ से दान करें तो बाँए हाथ को भी पता न लगे। आपको जिंदगी भर याद ही न आए कि मैंने किसी की मदद की थी।

मन ऋषियों–मुनियों को भी धोखा देता आया है। मन ने उन्हें धोखा इसलिए दिया क्योंकि उन्हें पूरा गुरु नहीं मिला था अगर गुरु मिला तो उन्होंने अपने गुरु की हिदायतों की परवाह नहीं की, 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं की और उन्होंने अंदर जाकर सच्चाई को नहीं देखा।

यह मन जन्म–जन्मांतर से धोखा देता आया है। जिसने गुरु की शरण ले ली गुरु के कहे मुताबिक अपने जीवन को बना लिया उसे यह मन धोखा नहीं दे सकता। जो सतसंगी मन के आगे हथियार छोड़ देते हैं उनके अंदर यही कमी है कि वे अंदर जाने की कोशिश नहीं करते, मेहनत के चोर हैं। जब मन का हमला होता है तो ये उसके आगे फेल हो जाते हैं पछताते हैं फिर थोड़ी बहुत कमाई करने लगते हैं गुरु अंदर मदद करता है लेकिन शिष्य फिर कमाई के, भजन के चोर बन जाते हैं। जो सारी जिंदगी इस तरह करते रहते हैं वही फेल होते हैं।

गुरु से दया प्राप्त करने का साधन अभ्यास ही है। प्यारेयो! गुरु गोबिंद सिंह जी का एक शिष्य जोगा था। हम भजनों में जोगे का नाम लेते हैं:

जोगे नूं बचाया बण आप पहरेदार जी।

जोगे की अच्छी कुर्बानी थी लेकिन जब उसका मन उसे धोखा देने लगा तो गुरु ने पहरेदार बनकर उसकी मदद की। अगर हम मजबूत हैं और गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं फिर किसी समय ऐसा वाक्या हो

जाता है कि मन धोखा देने लगता है तो उस समय गुरु बिल्कुल हाजिर होकर हर तरह से उपाय करता है। गुरु ऐसी ताकत है जिसकी निगाह किसी वक्त भी नहीं चूकती, गुरु हमेशा तवज्जों के जरिए अपने सेवक की देखभाल करता है।

जिन दिनों मैं गुफा में बैठकर अभ्यास कर रहा था उस समय कुछ प्रेमी आए। उनके दिल में ख्याल था हम भी अभ्यास करके आएं क्योंकि प्रेमियों के दिल में उमंग तो उठती है। मैंने उनसे कहा कि मेरा यह उसूल है कि रात को बारह बजे भजन–अभ्यास के लिए उठने की कोशिश होती है अगर आपको यह मंजूर है तो देख लें।

हुजूर सच्चे पातशाह ने बारह बजे से लेकर दिन चढ़ने तक पूरा पहरा दिया। किसी की भी गर्दन नीचे नहीं होने दी, जिसकी गर्दन नीचे होती हुजूर उसकी गर्दन पकड़कर सीधी कर देते। वे प्रेमी सुबह प्यार से माथा टेककर चले गए कि इस तरह अभ्यास करना हमारे लिए बहुत मुश्किल है। हमें पता नहीं कि वह कौन था, वह हमें नजर नहीं आया लेकिन जब हमारी गर्दन झुकती वह हमारी गर्दन सीधी कर देते।

जहाँ कोई प्रेमी अभ्यास करता है, गुरु वहाँ उसके पास होता है। हजरत बाहू की जिंदगी में ऐसा ही वाक्या घटा था। हजरत बाहू अपनी लेखनी में लिखते है:

न सवे न सवन देवे रो रहया बाल रिहाड़ी हू।

जैसे बच्चा रात को रोता है वह किसी भी चीज से नहीं मानता, वह माता–पिता को भी नहीं सोने देता।

बिन सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी।।

सिमरन के बिना जीवन बेकार चला जाता है। हम इस तरफ नहीं आते तो यहाँ तक सजा मिलती है कि काल, सर्प की योनियों में भेज देता है। सर्पों की उम्र बहुत लम्बी होती है। सर्प अपनी जहर की गर्मी से ही सड़ते रहते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सिमरन से सुख होत है सिमरन से दु:ख जाए।
कहे कबीर सिमरन किया साईं माहे समाए।।

नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी।।

चाहे यह सारी पृथ्वी का बादशाह बन जाए, सारे लोग इसे सलाम करने लग जाएं यह दुनिया पर तो जीत प्राप्त कर लेता है आखिर काल के आगे हार ही जाता है क्योंकि मौत किसी का लिहाज नहीं करती।

गुण निधान गुण तिन ही गाए जा कउ किरपा धारी।।

परमात्मा की भक्ति वही करता है जिस पर परमात्मा की दया–मेहर हो जाती है वही परमात्मा के चुनाव में आता है।

सो सुखीआ धन्नु उसु जनमा नानक तिस बलिहारी।।

संसार में वही सुखी है जो 'शब्द–नाम' की कमाई करता है, मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर चला जाता है। वही सच्चा धनवन्त है क्योंकि नाम ने ही हमारे साथ जाना है।

गुरु नानक साहब ने हमें इस छोटे से शब्द में सन्तमत को समझा दिया कि परमात्मा से बिछुड़कर हम कितने कष्ट पाते हैं। जो परमात्मा की भक्ति करते हैं उन्हें मन धोखा नहीं दे सकता। परमात्मा की भक्ति करने वाले ही दुनिया में शान्त हैं। जिन्होंने परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा को पा लिया है संसार में उनका जन्म ही मुबारक है।

***

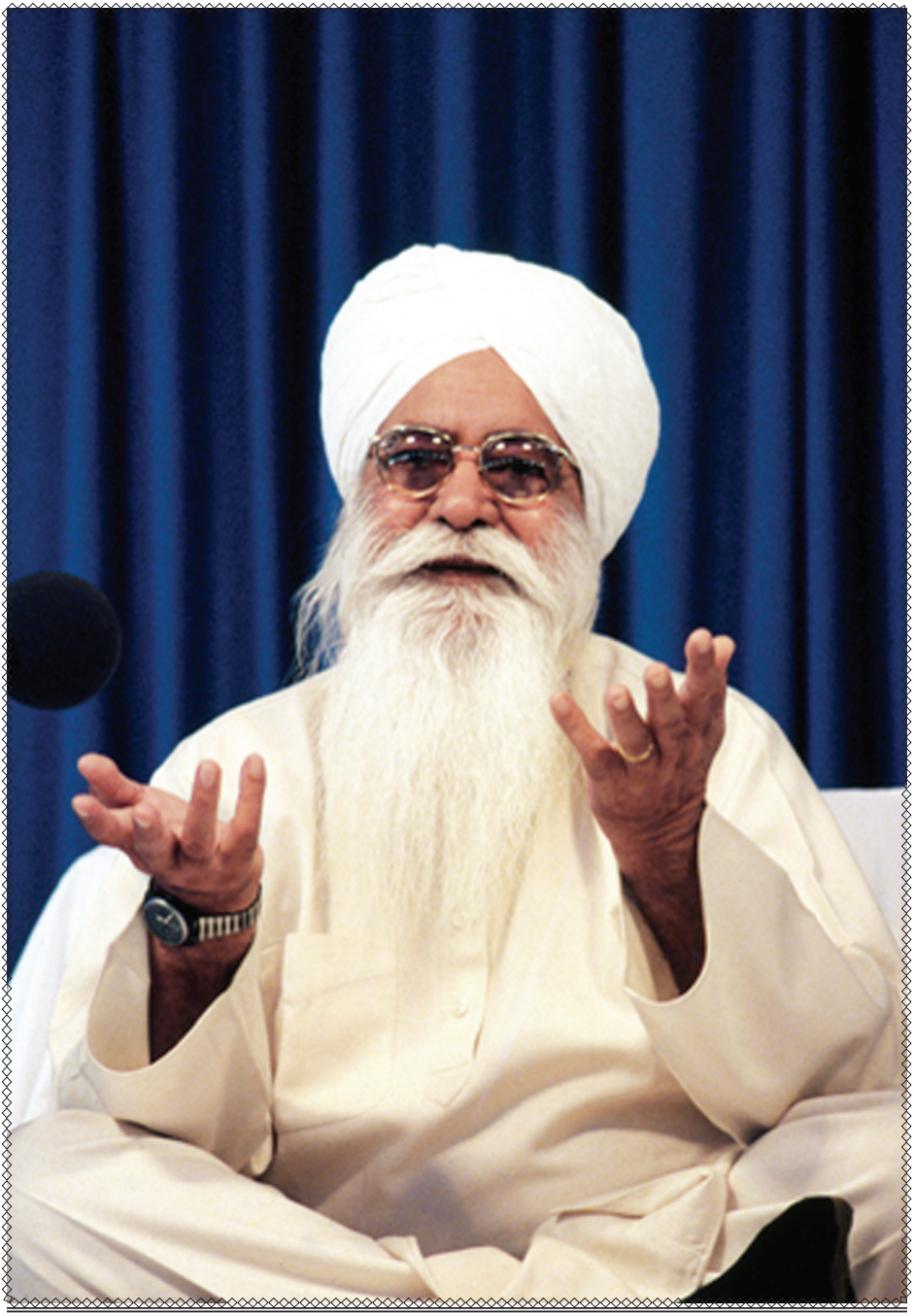

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

कुछ न बनें

07 सितम्बर 1994 जोहान्सबर्ग, साऊथ अफ्रीका

सबसे पहले उस परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हम बिछुड़ी हुई आत्माओं को दूर–दराज से ढूंढ़कर अपनी मेहर करके हमें अपनी आवाज और प्रकाश के साथ जोड़ा है।

मैं उनकी दया से, उनकी इज़ाजत से, उनके कहने के मुताबिक ही सदा संसार में उनका संदेश देने के लिए आता हूँ। मेरा अपना कोई मिशन नहीं, यह मिशन भी उस महान सतगुरु कृपाल का है और संदेश भी उनका ही है जो मैं आप आत्माओं तक पहुँचाता हूँ। आपको पता है कि संसार में गुरु के संदेश को घर–घर पहुँचाना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं होता। इसमें कई दिक्कतें आती हैं शरीर पर भी काफी बोझ पड़ता है और भूख–प्यास भी काटनी पड़ती है लेकिन वह जोरावर जो चाहे अपने शिष्य से करवा सकता है।

महाराज जी कहा करते थे कि गुरु चाहे तो लक्कड़ से भी काम ले सकता है। आपका यह संदेश है, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं और तब तक अपने शरीर को खुराक न दें जब तक अपनी आत्मा को खुराक नहीं दे लेते।'' तन की खुराक अन्न है अगर हम अन्न न खाएं तो हमारा शरीर काम नहीं करता इसलिए हम अन्न खाकर दुनिया के कारोबार करते हैं लेकिन हमें आत्मा की कमजोरी के बारे में ज्ञान नहीं होता। हमारी आत्मा जन्म–जन्मांतर से कमजोर है, कमजोर होने के कारण यह मन के आगे खड़ी नहीं हो सकती। मन इसे एक नौकर की तरह अपने आगे लगाए रखता है इसलिए हम जल्दी घबरा जाते हैं क्योंकि हमारी आत्मा के अंदर कमजोरी है।

मैंने कल भी बताया था कि सतसंग में जाना क्यों जरूरी है? हमारा मन अपनी आजादी को जाते हुए देखकर हमें सतसंग में जाने से रोकता है क्योंकि मन को दबकर रहना पसंद नहीं। जब हम रोज–रोज सतसंग में जाते हैं तो हमें रस मिलना शुरू हो जाता है, हमारे ऊपर नाम का रंग चढ़ना शुरु हो जाता है जिस तरह पहले सतसंग में आना मुश्किल था फिर सतसंग से हटना मुश्किल हो जाता है। मन ने हमारे अंदर जो कमजोरियाँ पैदा की हैं उसे हमारा विरोधी या महात्मा ही बता सकते हैं। महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं लेकिन विरोधी हमारे मुँह पर ही कह देता है।

प्यारेयो! हमें दोनों का ही बुरा नहीं मानना चाहिए, अपने अंदर पड़ताल करके उस ऐब को छोड़ने में ही आपका फायदा है। आप यह न सोचें कि इन्हें किसने बताया, इन्हें कैसे पता लगा? सन्त अपने विरोधी की भी प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि हे भगवान! आप निन्दक को लम्बी उम्र दें ताकि ये हमारे ऐब और कमजोरियाँ बताता रहे। परमात्मा ने निन्दक को सन्तों की मैल धोने के लिए ही पैदा किया होता है। पल्टू साहब कहते हैं अगर निन्दक कमर कसकर उन्हें साफ न करते तो सन्त कैसे तरते। प्यारेयो! अगर हमारे अंदर ऐब हैं तो उसे छोड़ने में ही हमारा फायदा है। कबीर साहब कहते हैं:

रिदा सिद जे निन्दया होय, हमरे कपड़े निन्दक धोय।

सूफी सन्त फरीद साहब घड़ियाल की मिसाल देते है:

ऐह निर्दोषां मारिए, हम दोशां दा क्या हाल।

आप हमें बहुत प्यार से समझाते हैं कि जब इस काल की नगरी में निर्दोषों को नहीं बख्शा जाता तो जो दोष करेगा उसे कैसे बख्शा जाएगा? सतसंग सुनने का तभी फायदा है कि हम जो कुछ सतसंग में सुनते हैं उस पर अमल करें।

महाराज कृपाल ने बार–बार यही कहा है, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठें।'' उसी तरह सतसंग सुनने का तभी फायदा है अगर हम अभ्यास करें। सभी सन्त डायरी का कोई न कोई तरीका बताते रहे हैं लेकिन परमात्मा कृपाल ने हमारे ऊपर भारी दया करके हमें लिखित रूप में डायरी रखने के लिए कहा है, डायरी एक किस्म का रोजनामचा है।

डायरी अपनी जिंदगी की पड़ताल करना है कि हमने आज क्या–क्या किया है, हम क्या सोच रहे है और हम क्या कर रहे हैं? कई प्रेमियों की डायरी देखने का मौका मिलता है लेकिन उनके अंदर बार–बार वही गलतियाँ होती हैं। मैं सदा सतसंग में भी बताया करता हूँ कि जब एक बार गलती हो गई तो वह गलती दूसरी बार क्यों हो? एक गलती ही जिंदगी को खुष्क कर देती है। हम सतसंग में फर्जिया तौर पर हाजरी लगाते हैं जो सुनते हैं वह नहीं करते, यह इसी तरह है जैसे हम मंदिर में जाकर माथा टेककर वापिस आ जाते हैं जो सुनते हैं हम वह नहीं करते।

मैं आर्मी में रहा हूँ, आर्मी में हर बंदे का रोजनामचा लिखा जाता है। जब मैंने महाराज कृपाल का यह तरीका देखा तो मेरा दिल बहुत खुश हुआ कि इससे अच्छी जिंदगी बनती है लेकिन प्रेमी क्या करते हैं? डायरी भरने का हुक्म तो मानते हैं लेकिन इस नुक्ते से अभी भी पिछड़े हुए हैं बार–बार वही गलती लिख देते हैं। जैसे हम रात को सोने से पहले डायरी भरते हैं आर्मी में भी शाम को सोने से पहले हाजरी लगाई जाती है।

हर सतसंगी को प्रेम–प्यार से महाराज कृपाल सिंह जी के कहे मुताबिक डायरी भरनी चाहिए। अगर सतसंगी एक सप्ताह डायरी के मुताबिक ही काम करें तो हमारी सुरत जरूर इन्द्रियों के भोगों से मुँह मोड़ लेगी। जो सतसंगी एक बार अंदर जाकर आत्मा को नाम का अमृत पिला देता है फिर वह विषय–विकारों का पानी नहीं पिएगा।

सन्त–महात्मा न समाज सुधारक होते हैं न ही आर्थिक हालत को अच्छी करने के लिए आते हैं। उनका मिशन बिछुड़ी आत्माओं को शब्द–प्रकाश से जोड़ने का होता है। मैं आपको सिर्फ वही बातें बोलता हूँ जो मैंने जिंदगी में खुद की हैं। मुझे गुरु परमात्मा मिला, मैंने गुरु परमात्मा को पकड़ा उसने मुझ पर बहुत दया की क्योंकि वह खुद ही जानता है किसके अंदर मेरे लिए तड़प है, वह जरूर सुनता है।

जब हम भजन पर बैठते हैं तो वह जरूर हमारे अंदर मिलने की तड़प पैदा करता है। सेवक और गुरु का आपस में मुकाबला चल रहा होता है। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है। सेवक कहता है, ''मैं तुझे सिमरन के जरिए ज्यादा याद करता हूँ।'' गुरु कहता है, ''मैं तुझे ज्यादा याद करता हूँ।'' भीखा साहब ने कहा है:

भीखा भूखा को नहीं सबदी गठड़ी लाल।
गिरह खोल न जानी तातें भए कंगाल।।

सन्त हमें नम्रता सिखाने के लिए ही आते हैं। मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का मौका मिला है, मैं आपकी नम्रता बयान नहीं कर सकता इसी तरह महाराज कृपाल सिंह जी बहुत नम्र थे। हम सतसंगियों को नम्रता का गुण जरूर धारण करना चाहिए यह शिरोमणि गुण है। ऊँची जगह का पानी अपने आप ही नीची जगह पर आ जाता है।

इसके मुत्तलिक बाबा बिशनदास जी यह कहानी कभी–कभी सुनाया करते थे। कोई गुरु चेला चले जा रहे थे। चेले ने कहा, ''महाराज जी! कोई ऐसा उपदेश करें जिससे शान्ति आ जाए और दिल भी खुश हो।'' गुरु ने कहा, ''देख बेटा! **कुछ बनो मत।''** चेले के दिल में तो यह था कि गुरु जी कोई लम्बी–चौड़ी कहानी सुनाएंगे लेकिन गुरु जी इतनी सी बात कहकर चुप हो गए कि कुछ बनना नहीं है।

आगे गए किसी राजा का अच्छा महल था। चेला अच्छे–अच्छे बिस्तर देखकर उन पर लेट गया कि यहाँ पर थोड़ा आराम कर लें। गुरु एक तरफ होकर अपना भजन–सिमरन करते रहे। जब उस सैरगाह में राजा के नौकर आए, उन्होंने उस चेले को सोते हुए देखकर उठाया कि यहाँ तो राजा ने सोना है, तू कौन है, जो यहाँ सो रहा है? चेले ने कहा, ''मैं साधु हूँ।'' राजा के नौकरों ने चेले को खूब पीटा और उससे कहा कि सोता राजा के उन बिस्तरों पर है जिस पर इत्तर और फूल बिछे हुए हैं और बनता है साधु। चेले ने अपने गुरु से जाकर कहा कि मुझे राजा के नौकरों ने पीटा है। गुरु ने कहा, ''**तू कुछ बना होगा**, तूने कोई कसूर किया होगा?'' चेले ने कहा, ''उन्होंने मुझसे पूछा कि तू कौन है?'' मैंने कहा, ''मैं साधु हूँ।'' गुरु ने कहा, ''तू कुछ बना तभी तेरी पिटाई हुई।''

गुरु को पता था कि अभी तो यह मन–इन्द्रियों का गुलाम है, अभी यह पूरी तरह तीसरे तिल पर एकाग्र नहीं हुआ लेकिन इसे साधु बनने का अहंकार हो गया है। जब आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचते हैं तो साधगति प्राप्त होती है। अगर हमारे ऊपर हमारा गुरु दया–मेहर करता है अंदर थोड़ी बहुत किरण दिखाता है तो हमें कुछ बनकर नहीं बैठना चाहिए।

आमतौर पर जब हमारे ऊपर हमारा गुरु मेहर करता है तो हम लोगों से माथे टिकवाने शुरू कर देते हैं, अखबारों में इश्तिहार बाजी करनी शुरु कर देते हैं या हाथी पर चढ़कर जुलूस निकालने शुरू कर देते हैं। दुनिया की वाह! वाह! कमा लेते हैं या लोगों को बेटे–बेटियाँ देना शुरू कर देते हैं कि परमात्मा ने तो आपकी किस्मत में बच्चा नहीं लिखा था लेकिन मैंने आपको बच्चा दे दिया है। हम लोगों का तो फायदा कर ही देते हैं लेकिन अपने पल्ले कुछ नहीं रहता।

***

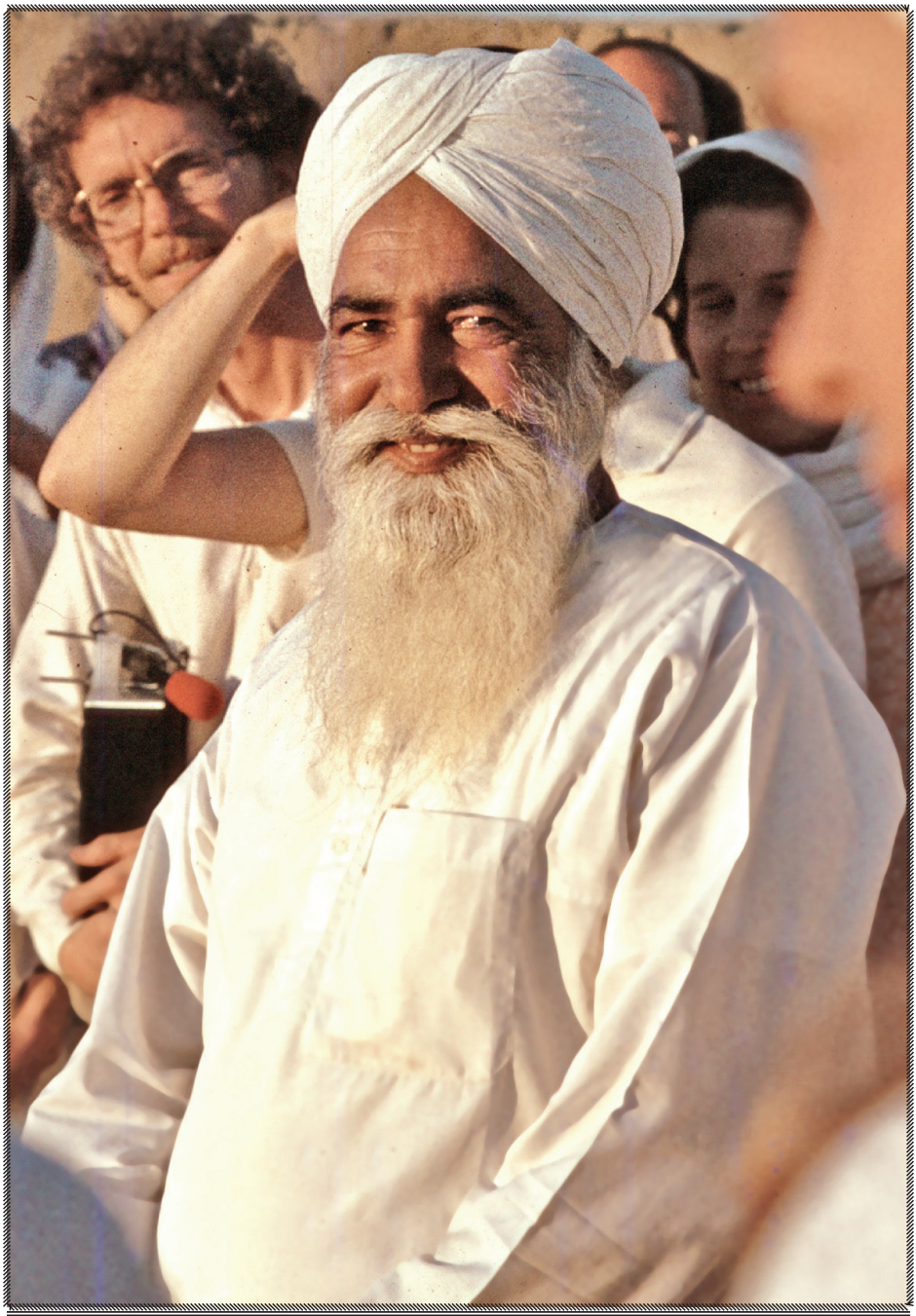

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

मालिक की मौज

16 दिसम्बर 1995 साँपला, हरियाणा

एक प्रेमी : *महाराज कृपाल के कुछ सतसंगियों को उत्तराधिकारी तलाश करने की इच्छा नहीं है और कुछ ऐसे भी हैं कि वे जब तक उत्तराधिकरी को नहीं ढूंढ़ लेते वे शान्त नहीं?*

बाबा जी : परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारे ऊपर अपार दया की और हमें अपनी याद में बैठने व यश गाने का मौका दिया है। प्यारेयो! मैंने सतसंगों में सदा ही बताया है और परम सन्तों की लेखनियों को पढ़ने से भी पता चलता है कि हर आत्मा का अपना–अपना नजरिया होता है, हर आत्मा के अपने–अपने कर्म होते हैं और उसके कर्मों के मुताबिक ही उसके जीवन के हर एक दिन का कार्यक्रम बनता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हर इंसान अपनी तकदीर में छह चीजें–अमीरी–गरीबी, तंदरूस्ती–बिमारी और सुख–दुःख लिखवाकर लाता है। हमारे जीवन में हर घटना का समय निश्चित होता है, समय आने पर घटना घट जाती है। हम नहीं जानते कि हमारे जीवन में यह घटना क्यों घटी? यह सब पहले से तय होता है, यह हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार ही होता है। हम अज्ञानी हैं इसलिए घबरा जाते हैं।''

हमारे जीवन में घटनाएं **मालिक की मौज** में ही घटती हैं। हर इंसान के लिए पहले से ही तय होता है कि वह अपने जीवन में पूर्ण सतगुरु के पास जाएगा या नहीं? नाम लेगा या नहीं? उसे सतगुरु पर भरोसा आएगा या नहीं? चाहे सतगुरु पड़ोस में ही रहना शुरु कर दे अगर हमारी तकदीर में नहीं लिखा तो हम उससे कोई फायदा नहीं उठा सकते।

एक बार गुरु नानक साहब बाला और मर्दाना के साथ जा रहे थे, उस समय आने–जाने के साधन नहीं थे पैदल ही यात्रा करनी पड़ती थी। पैदल चलते हुए आप जंगल में एक ऐसी जगह पर आ गए जहाँ बाबा बुड्ढा पशु चराया करता था। बचपन में बाबा बुड्ढा का नाम बुधा था।

बाबा बुड्ढा गुरु नानकदेव जी के पास आया, उसे लगा कि गुरु नानकदेव जी कोई साधु पुरुष हैं। बाबा बुड्ढा ने गुरु नानकदेव जी से विनती की अगर आप मुझे आज्ञा दें तो मैं आपके लिए अपनी बकरियों का दूध ले आऊँ या अपने घर से आपके लिए कोई चीज ले आऊँ? गुरु नानकदेव जी ने उसकी समझदारी की बातें सुनकर उससे कहा, ''तुम बहुत छोटी उम्र के हो लेकिन बुड्ढे आदमियों की तरह बातें करते हो।'' तब गुरु नानक साहब ने उसका नाम बाबा बुड्ढा रख दिया।

बाबा बुड्ढा को बहुत लम्बा जीवन भोगने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने कई उत्तराधिकारियों के माथे पर तिलक की रस्म की। बाबा बुड्ढा ने यह रस्म सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिंद तक निभाई। जब गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ा तब आपके बहुत से शिष्यों को उत्तराधिकारी की तलाश करने में कोई रूचि नहीं थी लेकिन बाबा बुड्ढा ही एक ऐसा आदमी था जिसने सदा ही उत्तराधिकारी को पहचाना।

भाई लैहणा जिस गाँव में रहते थे उस गाँव के लोग ज्वालादेवी की पूजा किया करते थे, भाई लैहणा भी ज्वालादेवी के पक्के भक्त थे। एक बार भाई लैहणा का मिलाप गुरु नानकदेव जी के एक सतसंगी के साथ हुआ, उस सतसंगी ने गुरु की महानता के बारे में बताया, ''अगर कोई व्यक्ति गुरु की पूजा करता है और पूर्ण गुरु से नाम लेकर भजन–अभ्यास करता है तो उसमें सभी देवी–देवताओं की पूजा आ जाती है। पूर्ण सतगुरु के सामने देवी–देवता कुछ नहीं हैं। सतगुरु शब्द–नाम का अवतार होता है।''

एक बार भाई लैहणा ज्वालादेवी के मंदिर की यात्रा करने जा रहा था, वह रास्ते में करतारपुर से गुजरा जहाँ गुरु नानक साहब रहते थे। भाई लैहणा ने सोचा कि मुझे गुरु नानकदेव जी के दर्शन कर लेने चाहिए। जब भाई लैहणा ने गुरु नानकदेव जी के दर्शन किए तो वह आपकी एक झलक पाकर चकित हो गया। वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने सोचा यह वही जगह है जहाँ उसे होना चाहिए था। वह देवी के दर्शनों के लिए नहीं गया।

गुरु नानकदेव जी ने उसका नाम पूछा? उसने कहा, ''मेरा नाम लैहणा है।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''तुमने लेना है और मैंने तुम्हें देना है।'' गुरु नानकदेव जी ने उसे जो सेवा दी उसने वह सेवा सदा प्रेम और लगन से की। उसकी भक्ति देखकर गुरु नानकदेव जी ने उससे कहा, ''मैं तुम्हारी सेवा से बहुत खुश हूँ, मैं तुम्हें अपने शरीर का अंग बनाऊँगा।'' उसके बाद गुरु नानकदेव जी ने उसका नाम अंगद रखा। इस तरह वह भाई लैहणा से गुरु अंगद बनें।

पूर्ण सतगुरु भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में जानते हैं। गुरु नानकदेव जी भी जानते थे कि जब वह चोला छोड़ेंगे तो उनके परिवार वाले, उनके बेटे व अन्य लोग गुरु अंगद की कद्र नहीं करेंगे इसलिए उन्होंने चोला छोड़ने से पहले गुरु अंगद को वापिस अपने गाँव मत्ते नांगे की सराय जाने के लिए कहा और गुरु अंगद वापिस अपने गाँव आ गए।

ऐसा सदा से ही होता आया है कि कुछ लोग उत्तराधिकारी के पास जाते हैं और कुछ लोग नहीं जाते। कुछ भाग्यशाली आत्माएं जब तक पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी को ढूंढ़ न लें उन्हें शान्ति नहीं मिलती लेकिन बहुत से ऐसे भी होते हैं जिनमें पूर्ण सतगुरु के उत्तराधिकारी को खोजने की इच्छा नहीं होती, यह उनकी तकदीर के अनुसार ही होता है। जिनके मस्तक में लिखा होता है वे ही उत्तराधिकारी के पास जाते हैं और बाकी लोग इधर–उधर भटकते रहते हैं।

गुरु नानकदेव जी के बेटे श्रीचन्द ने गुरु नानकदेव जी से नामदान नहीं लिया था। श्रीचन्द ने अविनाशी मुनि से नाम लिया था, उसके पास 'दो–शब्द' का भेद था और वह उदासी मत से सम्बंध रखता था। श्रीचन्द ने भी गद्दी चलाई और गुरु अंगद के बराबर पंथ चलाया।

बाबा अमोलक दास ने श्रीचन्द से नाम लिया था। मुझे बाबा अमोलकदास का धुंधला सा चेहरा याद है, मुझे उनकी सेवा करने का मौका मिला था। मैं उन्हें पीने के लिए दूध दिया करता था। बाबा बिशनदास जी ने बाबा अमोलक दास जी से 'दो–शब्द' का भेद लिया था। उसी क्रम में मैं 'दो–शब्द' का भेद लेने वाला तीसरा आदमी हूँ। मैंने जो कुछ देखा है आपको वही बता रहा हूँ। बाबा अमोलकदास ने केवल दो ही लोगों बाबा बिशनदास और पटियाला के राजा भूपेन्द्र सिंह को नामदान दिया था।

हीरा सिंह ने बाबा अमोलकदास के आर्शीवाद से नाभा का राज्य प्राप्त किया। बाबा अमोलकदास बडूख्याँ गाँव में रहते थे यह गाँव नाभा रियासत के बीच में था। हीरा सिंह बहुत गरीब आदमी था, उसके पास एक ऊँट गाड़ी थी वह उस गाड़ी पर सामान रखकर बडूख्याँ गाँव से नाभा ले जाया करता था। हीरा सिंह प्रेमी भक्त था, वह आते और जाते हुए बाबा अमोलकदास को माथा टेका करता था, ऐसा काफी समय तक चलता रहा।

एक दिन बाबा अमोलकदास ने हीरा सिंह से कहा, ''हीरा सिंह! कुछ माँगना चाहते हो तो माँग लो?'' हीरा सिंह ने जवाब दिया, ''मेरे पास सब कुछ है, आपने मुझे सब कुछ दिया है।'' बाबा अमोलकदास ने फिर कहा, ''तुम जो माँगोगे तुम्हें दिया जाएगा।'' फिर भी हीरा सिंह ने वही कहा। इस तरह हीरा सिंह ने तीन बार यही कहा कि उसके पास सब कुछ है और वह संतुष्ट है लेकिन जब सन्त–सतगुरु की मौज होती है और वे सेवक को कुछ देना चाहते हैं तो वे उसे जरूर देते हैं। बाबा अमोलकदास ने कहा,''हीरा सिंह! तुझे नाभा का राजा बना दें?''

जब सतगुरु वरदान दे रहे होते हैं, अपनी दया कर रहे होते हैं तो आस–पास के लोग उनका विश्वास नहीं करते। लोग सोचते हैं कि ये ऐसे ही कह रहे हैं इस बात की कोई कीमत नहीं है। जब आस–पास के लोगों ने सुना कि बाबा अमोलकदास हीरा सिंह से यह कह रहे हैं कि मैं तुम्हें नाभा का राजा बनाऊँगा, उसके बाद हीरा सिंह के दोस्त उसका मजाक उड़ाने लगे। वे बाजार में हीरा सिंह से यह कहते, ''आओ! अपने नाभा के राजा की ऊँट गाड़ी में सामान लाद दें।''

जब नाभा के राजा भगवान सिंह ने चोला छोड़ा तो उसका कोई बेटा नहीं था उसका कोई उत्तराधिकारी भी नहीं था। उस समय भारत पर ब्रिटिश सरकार का राज्य था अगर किसी राजा का उत्तराधिकारी नहीं होता था तो वे उसके नजदीक के रिश्तेदार को ढूंढ़ने की कोशिश करते थे। हरिद्वार में मरे हुए व्यक्ति के फूल लेकर जाते हैं, वहाँ के पंडे मरे हुए व्यक्ति के पूर्वजो का सारा विवरण रखते हैं।

ब्रिटिश सरकार को हरिद्वार से पता चला कि हीरा सिंह, राजा भगवान सिंह का सबसे नजदीकी रिश्तेदार है। इस कारण ब्रिटिश सरकार ने हीरा सिंह को नाभा रियासत का राजा बनाया। हीरा सिंह बिल्कुल अनपढ़ था वह हस्ताक्षर करना भी नहीं जानता था लेकिन वह भारत की सभी रियासतों का मुखिया बना।

मैंने भाई गुरदास की बानी पर कई सतसंग किए हैं लेकिन समय की कमी के कारण सन्तबानी आश्रम उन्हें प्रकाशित नहीं कर सका। आपको इन सतसंगों में ऐसे सवालों के जवाब मिलेंगे। भाई गुरदास, गुरु अर्जुनदेव जी के मामा थे। भाई गुरदास जी तीन गुरुओं गुरु रामदास, गुरु अर्जुनदेव और गुरु हरगोबिंद के समय में रहे। भाई गुरदास ने गुरु हरगोबिंद के समय में चोला छोड़ा। भाई गुरदास भी बाबा बुड्ढा की तरह ही थे।

जो अंदर जाते हैं भजन–अभ्यास करते हैं वे जानते हैं कि ज्योति कहाँ कार्य कर रही है। इसी तरह जब गुरु रामदास जी ने चोला छोड़ा तब भी उत्तराधिकारी का विवाद हुआ। गुरु रामदास जी के पुत्रों के बीच झगड़ा हुआ। उस समय में भाई गुरदास और बाबा बुड्ढा ने ही उत्तराधिकारी की समस्या को हल किया।

प्यारेयो! बहुत से लोग पार्टियाँ बनाने में लग जाते हैं, मैं–मेरी के चक्कर में फँस जाते हैं। सभी गुरुओं ने कहा है कि सच्चाई का कभी नाश नहीं होता, कुछ लोग सच्चाई को पहचान लेते हैं। महाराज कृपाल अक्सर कहा करते थे, ''जैसे एक बल्ब फ्यूज हो जाने पर दूसरा बल्ब उसकी जगह ले लेता है लेकिन प्रकाश एक ही होता है।''

एक प्रेमी: सन्त जी! सन्तबानी मासिक पत्रिका में रसल परकिन्स ने एक जगह यह बताया है कि 77 आर.बी. आश्रम में मई 1976 में आपने उसे अकेले भजन–अभ्यास में बिठाया था। उस समय रसल ने अंदर जो दर्द महसूस किया उसका जिक्र किया हुआ है कि वह किस तरह बिना हिले–डुले सीधे बैठकर अपना ध्यान एकत्रित कर सका। उस समय आपने रसल को यह बताया था अगर वह दस से पन्द्रह दिनों तक बिना हिले–डुले पूरी तरह सीधा बैठकर अभ्यास करेगा तो उसे दर्द की कोई समस्या नहीं होगी, अभ्यास में नींद नहीं आएगी और रूहानी चढ़ाई होगी।

हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप इस बारे में हमें कुछ बताएं जो हममें से बहुत से प्रेमियों के लिए भी दर्द का मुकाबला करने में मददगार हो। हमें भजन–अभ्यास में नींद न आए और हम अंदर ज्यादा से ज्यादा तरक्की कर सकें।

बाबा जी : उस समय के बारे में मैं आप लोगों को क्या बताऊँ। मैं उस समय बहुत उदास और व्याकुल था, मैं चौबिस घंटे में एक बार बाहर आता था। जब रसल से मेरी पहली मुलाकात हुई उस मुलाकात में मैंने

उसे डाँटा और कुछ रूखे शब्दों का इस्तेमाल भी किया अगर रसल के अंदर जरा भी कमजोरी होती तो वह मेरे पास नहीं आता क्योंकि वह जान चुका था कि सन्त जी किसी से नहीं मिलते और किसी को अपने यहाँ आने की इजाजत भी नहीं देते।

रसल को श्रीगंगानगर से यह सूचना मिली थी कि सन्त जी किसी से नहीं मिलते। सन्त जी के पास जाने का कोई फायदा नहीं लेकिन उसका प्रेम और भक्तिभाव देखकर ग्रुप लीडर जंगीर सिंह ने अपने बेटे को रसल के साथ भेजा ताकि वह मुझसे मिलने आ सके।

जब रसल आया उस समय जो सेवादार मेरे पास रहता था उसने कभी पश्चिमी प्रेमी को नहीं देखा था। वह बहुत घबराया और उसने ऊपर आकर मुझसे कहा कि अंग्रेज आए हैं। मैंने उससे कहा, ''चिन्ता मत करो। उन्हें बिठाओ मैं थोड़ी देर में उन्हें बुला लूँगा।'' मैं जब इन लोगों से मिला तो ये लोग बहुत घबराए हुए थे। कुलवन्त, रसल के साथ था। जब मैंने कुलवन्त को सबका परिचय करवाने के लिए कहा तो कुलवन्त ने घबराहट में अपनी पत्नी लिन्डा को रसल की पत्नी बताया।

प्यारेयो! अगर कोई व्यक्ति जिद्द करके और भक्तिभाव से सतगुरु के दरवाजे पर बैठता है तो सतगुरु को भी उसे कुछ देना पड़ता है। रसल जो कुछ प्राप्त करना चाहता था उसने वह प्राप्त किया।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर हम अपने आपको पहले से ही तैयार कर लें तो हमें इतना अधिक दर्द महसूस नहीं होगा। यह दर्द इस तरह का होता है जैसे हम रेशमी कपड़े को जोर लगाकर कंटीली झाड़ियों में से निकालें तो वह कपड़ा तार–तार होकर फट जाएगा। अगर आप रेशमी कपड़े को धीरे–धीरे कंटीली झाड़ियों में से निकालेंगे तो वह कपड़ा आसानी से निकल सकता है।'' अगर आप सतगुरु के पास जाने से पहले तैयार हैं तो आपको दर्द सहन नहीं करना पड़ेगा।

रसल परकिन्स के साथ जो कुछ भी बीता उसे जो कुछ अभ्यास में प्राप्त हुआ वह उसकी भक्ति, प्रेम और ईमानदारी के कारण हुआ। रसल जैसा हृदय बनाना बहुत कठिन है और साधु बनना भी कठिन है। जो साधु किसी से न मिलता हो अगर हम पक्के इरादे और ईमानदारी से तलाश कर रहे हैं तो हम निश्चय ही उस साधु से फायदा उठाएंगे।

मक्खन शाह लुभाणा गुरु तेगबहादुर की तलाश में गया और जब उसने गुरु तेगबहादुर को पहचान लिया तब वह छत पर जाकर जोर–जोर से बोला, ''गुरु लादो रे! गुरु लादो रे!'' उस समय वहाँ बाईस गुरु गद्दियाँ थी और वे सब गुरु होने का दावा करते थे लेकिन जब मक्खन शाह लुभाणा ने गुरु तेगबहादुर को ढूंढ़ लिया तो उसने सारी दुनिया में होका दिया।

गुरु तेगबहादुर साहब सोढ़ी परिवार के थे। जब यह कहा गया कि सच्चा गुरु बाबा बकाला में है तो सोढ़ी परिवार के सारे सदस्यों ने वहाँ अपने–अपने प्रचारक भेज दिए लेकिन जिस व्यक्ति ने गुरु की पहचान करनी होती है वह वहाँ जाएगा चाहे कुछ भी हो वह गुरु को पा लेगा।

मेरे पास आने से पहले रसल परकिन्स कई प्रेमियों के पास गया। उन्होंने उसे ऊँचे मंच पर बिठाया, चाय–पान करवाया और बहुत सम्मान दिया लेकिन इस फकीर के पास कोई दुनियावी मंच नहीं था और न ही मैं उसे कोई दुनियावी मान–सम्मान दे सकता था। अगर रसल परकिन्स नाम, यश और सांसारिक चीजों का भूखा होता तो वह मेरे पास कभी न आता क्योंकि उसे मेरी बजाय दूसरों के पास अच्छा स्थान मिल सकता था, मेरे पास आकर उसे केवल डाँट सुननी पड़ी। कबीर साहब कहते हैं:

साधु स्यों झगड़ा भला, भलो न साकत संग।

साधु के साथ झगड़ा करने पर भी वह हमें कुछ न कुछ देगा। गुरु के अंदर शब्द की धारा बह रही होती है, यह धारा बहुत शक्तिशाली होती है। साधु झगड़े में भी हमें कुछ न कुछ देगा।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कुम्हार घड़े को बनाते समय अंदर अपना हाथ भी रखता है अगर हम साधु के साथ झगड़ रहे हैं तब भी हम साधु से कुछ प्राप्त कर रहे हैं, उससे फायदा उठा रहे हैं।''

प्यारेयो! जो प्रेमी शान्त और स्थिर होता है सतगुरु उसे हमेशा देने के लिए तैयार रहते हैं। देने वाले में कमी नहीं होती सवाल तो लेने वाले का है। मैं तो जमीन के अंदर बैठा हुआ था, मेरा दुनिया में आने का कोई इरादा नहीं था। ऐसे साधु को दुनिया में ले आना आसान काम नहीं था। यह रसल परकिन्स, डोरिस मैथीजेट्ज, कैन्ट बिकनल, एनी विगीन्स और अन्य प्रेमियों के साहस से संभव हो सका। उनके प्यार को देखकर ही मैं इस संसार में बाहर आया।

मुझे अच्छी तरह याद है कि एक बार डोरिस ने मुझे बहुत सी तस्वीरें दिखाई और उनके बारे में बहुत कुछ बताया। उस समय मैं अंदर से बहुत हँस रहा था। जब हम फ्लोरिडा गए वहाँ जोनस जेराड से मिले तो उसने मुझसे पूछा, ''क्या आपने पहले कभी ऐसा हवाई अड्डा देखा है?'' मैंने उसे प्यार से बताया, ''अगर तुम अंदर जाओ तो इससे भी बढ़िया लाखों हवाई अड्डे देखोगे।''

प्यारेयो! हमें भजन–अभ्यास में बैठना चाहिए। हमें अपने मन को रसल परकिन्स जैसा बनाना चाहिए। हमें रसल परकिन्स के उत्साह से प्रेरणा लेनी चाहिए, सतगुरु की दया सबके लिए है।

मैं अपने सतगुरु की शान और बड़ाई में क्या कह सकता हूँ? महाराज कृपाल ने माता मिल्ली को बताया था कि जो मेरे बाद में काम करेगा उसे इस संसार में माता की बहुत जरूरत होगी। जब माता मिल्ली 77 आर.बी. आश्रम आई तो उसने मुझे बताया कि मुझे ऐसा हुक्म है। मैंने कहा, ''हाँ! मुझे माता की बहुत जरूरत है।'' माता मिल्ली जब तक जीवित रही उसने एक प्यारी माता की तरह मेरी देखभाल की।

मैं जब कभी सन्तबानी आश्रम अमेरिका या जिस भी देश में गया, वह जहाँ कहीं भी होती सतसंग के बाद मेरे पास आती मुझे चूमती और शुभरात्रि कहती तो ही उसे संतोष मिलता। वह मेरी सगी माता की तरह थी, वह मेरी बहुत प्यारी माता थी। प्यारेयो! मैं भारतीय संस्कृति में पलकर बड़ा हुआ था जहाँ चूमना बुरा माना जाता है लेकिन वह जब कभी मेरे पास आती चाहे वहाँ कितनी भी संगत होती मैं अपने आपको उसके आगे कर देता और उसे चुम्बन लेने की इजाजत दे देता था।

जब हम नैनिमों गए वहाँ पप्पू की दादी आई, वह पप्पू के पास चुम्बन लेने के लिए आई तो पप्पू पीछे हट गया। मैंने पप्पू से कहा कि इसे ऐसा करने दो यह तुम्हारा चुम्बन लेना चाहती है। मेरे कहने का भाव कि यह हमारे भारतीयों की आदत में नहीं है, हमारी संस्कृति में चूमना बुरा माना जाता है। मैं अपने प्यारे सतगुरु की महिमा के बारे में क्या कह सकता हूँ? यह वही है जो अपनी पहचान देता है। आसमान में कृपाल है, कृपाल ही है जो आता है और हमारी रक्षा करता है। हर जगह पर कृपाल है। ऋषि–मुनि भी सतगुरु की महिमा नहीं गा सकते।

जले कृपाल, थले कृपाल, है भी कृपाल, होसी भी कृपाल।
महिमा कहि न जाए, गुरु समरथ देव। गुरु पार ब्रह्म परमेसुर अपरम्पार अलख अभेद।।

भारत में अभी भी कई लोग जीवित हैं जिन्हें मेरे प्यारे सतगुरु ने कहा था कि तुम लोग मेरे साध का ख्याल रखना। मैं अक्सर बताया करता हूँ कि जिस माता ने मुझे जन्म दिया मैंने उसे नहीं देखा लेकिन जिस माता ने मेरा पालन–पोषण किया वह मुझसे बहुत प्यार करती थी। मैं भी उसके प्यार के मोह में इतना बंधा हुआ था कि मुझे और किसी से मोह नहीं था। मेरे लिए अपनी माता का प्यार और मोह छोड़ना बहुत मुश्किल था।

जब मैं प्यारे कृपाल से मिला तो आपने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं अपनी माता के प्यार को भी भूल गया। मैं आपके प्यार में इतना पागल हो

गया कि मैं सब कुछ भूल गया। मुझे केवल आपकी ही याद रही क्योंकि आपका प्यार ऐसा था जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता उसे केवल आत्मा ही महसूस कर सकती है।

जब महाराज कृपाल इस संसार से विदा हो गए, मेरी आँखों से दूर हो गए तो मेरे लिए इस संसार में रहना मुश्किल हो गया। ऐसा नहीं कि अब मैं उन्हें देख नहीं रहा हूँ, आप सदा मेरे साथ हैं। जो अंदर गया है जिसने शब्द–स्वरूप गुरु को प्रकट कर लिया है वही इसका अनुभव कर सकता है। केवल वही जानता है कि सतगुरु देह के दर्शन की क्या कीमत है? वही जानता है कि सतगुरु की देह के दर्शन करने से कितने पाप कट जाते हैं। आप मेरे अंतर में हैं, सदा मेरे साथ हैं, मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं और मेरी रखवाली कर रहे हैं।

मुझ पर कभी कोई जिम्मेवारी नहीं रही क्योंकि सारी जिम्मेवारियाँ मेरे पिता संभाला करते थे। मैं सदा उनको सांसारिक जिम्मेवारियाँ संभालते हुए देखकर खुश होता था। आप ऐसे इंसान की कल्पना करें जिसने कभी कोई सांसारिक जिम्मेवारी न संभाली हो अगर उसे रूहानियत की जिम्मेवारी दे दी जाए तो वह कैसा महसूस करेगा? अब सतगुरु हमारे सामने नहीं हैं और आपने रूहानियत की जिम्मेवारी मुझ पर डाल दी है। यह बहुत कठिन काम है क्योंकि मैं इस लायक नहीं था।

मुझे आपसे जो प्यार मिला मैं उसे कभी भुला नहीं सकता। मैं सदा आपके प्यार को याद करता हूँ और यही कामना करता हूँ कि आप सदा मेरी आँखों के सामने रहें। सच्चा शिष्य जो अंदर जाता है जिसने अपने अंतर में गुरु की महानता और शान को देखा है, वह कभी भी अपने गुरु की पगड़ी पहनने की कामना नहीं करेगा। ऐसा शिष्य सतगुरु के संसार छोड़ने के बाद एक क्षण भी इस संसार में रहने की कामना नहीं करेगा, वह अपने सतगुरु के जीवनकाल में ही संसार को छोड़ना चाहेगा।

मशहूर कहावत है अगर कोई अपने प्यारे की सेज पर शरीर छोड़ देता है तो उसकी हड्डियाँ या राख स्वर्गों को जाती है। इसी तरह एक सच्चा शिष्य चाहता है कि जब तक उसका सतगुरु देह स्वरूप में हो तभी वह संसार को छोड़ दे ताकि उसे सतगुरु के वियोग को गले न लगाना पड़े। मैं दिल की गहराई से कहता हूँ कि मैं आपसे भजन–अभ्यास नहीं करवा रहा बल्कि मैं भी कृपाल का सेवक बनकर आप लोगों के साथ बैठकर भजन–अभ्यास कर रहा हूँ।

अगर मैं आजकल के गुरुओं की तरह होता तो आपको भारत में चारों और घुमाता। अच्छे होटलों में ठहराता और अच्छे–अच्छे दृश्य और चीजें दिखाकर वापिस लौटाता जैसा कि आजकल के गुरु करते हैं। अगर मैं अमेरिका जाता तो मैं चौंकड़ी लगाकर अपने घुटनों और आपसे चौंकड़ी लगवाकर आपके घुटनों को तकलीफ न देता। मैं आपको समुंद्र के किनारे सुंदर दृश्य दिखाने ले जाता लेकिन मैं खुद भजन–अभ्यास कर रहा हूँ और आपसे भी भजन–अभ्यास करवा रहा हूँ क्योंकि मैं अब भी अपने आपको महाराज कृपाल का छोटा सा सतसंगी समझता हूँ।

जब मैं आपके देश में होता हूँ जो वहाँ भजन–अभ्यास कर रहे होते हैं तो उन्हें सदा ही लाभ की प्राप्ति होती है। अन्त में आपको यह महसूस होगा कि महाराज कृपाल के सतसंगी के साथ भजन–अभ्यास करके आपको कितना फायदा हुआ है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमारी सच्ची बैठक वह है जो हम नाम का अभ्यास करने वालों के साथ करते हैं।''

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''कभी भी साकत की संगत न करें। जो परमात्मा की भक्ति नहीं करता चाहे वह उच्च कुल में पैदा हुआ हो, चाहे वह कितना भी चालाक हो, चाहे कितना भी सुंदर हो अगर उसके हृदय में सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्यार नहीं तो आप उसे मरा हुआ जानें।''**

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

जुलाई 1989

भजनों को अपनी प्रार्थना बनाएं

आप सभी के भजन बहुत अच्छे थे बहुत प्यारे थे। आपने जिस उत्साह के साथ ये भजन गाए हैं ये आपके दिल से निकले हैं। हम परमात्मा के आगे इस तरह प्रार्थना करें जिस तरह एक बीमार डॉक्टर से प्रार्थना करता है कि आप मुझे ठीक करें। हम सर्वशक्तिमान परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं कि हम आपके दरवाजे पर आए हैं आप हमारी हालत सुधारें, हमारे ऊपर दया करें।

वास्तविकता यह है कि हमने पिछले जन्मों में पाप किए थे उन बुरे कर्मों की सजा भुगतने के लिए और अच्छे कर्मों का फल भुगतने के लिए हम इस स्थूल मंडल में आए लेकिन किसी को भी इन कर्मों का दु:ख-सुख भोगते हुए संतोष नहीं मिलता, यहाँ हर कोई दु:खी है।

पिछले जन्मों में हमने जो अच्छे कर्म किए थे उसका फल हमारा स्वास्थ्य अच्छा होता है, हम अच्छे परिवार में पैदा होते हैं हमारी अच्छी बुद्धि होती है। बुरे कर्मों का फल हम गरीब घर में पैदा होते हैं हमें कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इस संसार में सिर्फ वही लोग सुखी हैं जो शब्द–नाम की भक्ति करते हैं और अपनी आत्मा को वापिस अपने घर ले जाते हैं। हम जब इकट्ठे बैठकर भजन गाते हैं तो भजन का एक–एक शब्द हमारे दिल से इस तरह निकलना चाहिए कि हम अपने प्यारे परमात्मा के आगे प्रार्थना कर रहे हैं।

केवल एक प्यासा आदमी ही पानी की कद्र जानता है। कबीर साहब कहते हैं, ''जिसे प्यास लगी है वह पानी की कद्र जानता है लेकिन जो प्यासा नहीं है उसके पास चाहे आप घड़े भरकर भी पानी के ले जाएं वह पानी नहीं पिएगा क्योंकि वह प्यासा नहीं है, वह पानी की कद्र नहीं जानता लेकिन प्यासा आदमी पानी की बहुत कद्र करता है।''

अगर हम यह महसूस करें कि हम परमात्मा से बिछुड़ गए हैं वह हमसे दूर नहीं हमारे अंदर है लेकिन हम यह नहीं जानते कि वह कहाँ है और हम उससे कैसे मिलें? गुरु हमें हमारे बिछुड़े हुए परमात्मा से मिलाने में मदद करते हैं इसलिए हम गुरु की तारीफ करते हैं।

आप जानते हैं कि जब तक मुझे परमात्मा कृपाल नहीं मिले थे मैं परमात्मा की तलाश में कई समाजों में गया लेकिन मुझे कोई सहारा नहीं मिला। परमात्मा कृपाल के मिलने पर मुझे अहसास हुआ कि सर्वशक्तिमान परमात्मा मेरे साथ थे लेकिन मुझसे अलग हो गए थे। यह परमात्मा कृपाल की दया थी कि मैं उन्हें मिल सका।

मैंने कल रात सतसंग में कहा था अगर हमें गुरु से फायदा होता है कि गुरु ने हमारे लिए कुछ किया है तो गुरु के प्रति हमारा दिल प्यार से भर जाता है। हमें गुरु की महिमा को छिपाना नहीं चाहिए। हमें अपने गुरु का आभारी होना चाहिए और उनकी सराहना करनी चाहिए। ***